एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बैंकसिया की खेती: भारतीय किसानों के लिए व्यावहारिक निर्देशिका

*विकास यादव, रूपाली शर्मा एवं संदीप भारद्वाज
चौ. चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasydv100@gmail.com

बैंकसिया ऑस्ट्रेलिया का एक बहुवर्षीय और सदाबहार पौधा है जो प्रोटीएसी परिवार से आता है। इसकी पहचान इसके लंबे बेलनाकार फूलों के स्पाइक हैं। एक स्पाइक में सैकड़ों छोटे फूल एक साथ खिलते हैं। फूलों का रंग क्रीम, पीला, नारंगी, लाल या गुलाबी होता है। इसके फूलों में मकरंद अधिक बनता है जो मधुमक्खियों को आकर्षित करता है। भारत में कट फ्लावर, लैंडस्केपिंग और सजावटी बाज़ार में नए तरह के फूलों की मांग बढ़ रही है, जहाँ बैंकसिया एक गैर-पारंपरिक विकल्प बन सकता है।

बैंकसिया के मुख्य उपयोग

- **ताज़े कट फ्लावर:** स्पाइक मज़बूत होते हैं और कटाई के बाद गमलों में 2 से 3 सप्ताह तक ताज़े बने रहते हैं।
- **सूखे फूल:** सूखने पर भी इनका आकार और रंग बना रहता है। क्राफ्ट, वॉल हैंगिंग और सूखे गुलदस्तों में इसका उपयोग होता है।
- **लैंडस्केपिंग:** फार्महाउस, रिसॉर्ट, पार्क और सड़क किनारे लगाने के लिए इसकी मध्यम और बड़ी किस्में काम आती हैं।
- **गमले एवं शहरी बागवानी:** इसकी बौनी किस्मों को छोटे बगीचों और गमलों में आसानी से लगाया जा सकता है।
- **मधुमक्खियों का पालन:** मकरंद अधिक होने के कारण यह मधुमक्खियों के पालन के लिए अच्छा स्रोत है।

चित्र 1: बैंक्सिया का पुष्पक्रम (स्रोत: गूगल/सांकेतिक)

चित्र 2: बैंक्सिया के फूलों का सजावटी उपयोग (स्रोत: गूगल/सांकेतिक)

प्रमुख प्रजातियां एवं किस्में
कट फ्लावर के लिए

1. बैंकसिया मेंज़ीसी: इसके फूल गुलाबी, लाल और क्रीम रंग के होते हैं। इसके तने लंबे और सीधे होते हैं।
2. बैंकसिया स्पिनुलोसा: यह छोटे से मध्यम आकार की झाड़ी है जिसमें पीले और नारंगी रंग के फूल आते हैं।

लैंडस्केपिंग के लिए

1. बैंकसिया इंटीग्रिफोलिया: यह तेज़ी से बढ़ने वाला मध्यम पेड़ है। तटीय और खुले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।
2. बैंकसिया सेराटा: इसकी पत्तियों के किनारे आरी जैसे कटे होते हैं। यह कम उपजाऊ ज़मीन में भी बढ़ता है।
3. बैंकसिया एरीसिफोलिया: इसमें नारंगी रंग के बड़े स्पाइक आते हैं।
4. बैंकसिया मार्जिनाटा: इसमें हल्के पीले फूल आते हैं।

गमलों के लिए बौनी किस्में

- बर्थडे कैंडल्स: पीले-नारंगी फूल और कम ऊंचाई।
- हनी पॉट: छोटे गमलों के लिए उपयुक्त।
- लिटिल पाल: बॉर्डर प्लांटिंग के लिए सही।

भारत में खेती की संभावनाएं

- **पहाड़ी व ठंडे क्षेत्र:** हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर भारत के उच्च जल-निकास वाले क्षेत्रों में।
- **मैदानी व शुष्क क्षेत्र:** राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के शुष्क क्षेत्रों में जहां रेतीली मिट्टी है और सर्दियों में पाला कम पड़ता है।

भूमि एवं मिट्टी प्रबंधन

बैंकसिया खुली धूप में बढ़ता है। 15°C से 35°C का तापमान इसके अनुकूल है।

मिट्टी के मापदंड

- प्रकार: बलुई, बलुई दोमट या हल्की पथरीली मिट्टी।
- pH मान: 5.5 से 7.0 (हल्की अम्लीय से उदासीन)।
- जल निकास: पानी बिल्कुल न ठहरे।

भारी चिकनी या काली मिट्टी में इसे न लगाएं। पानी रुकने की समस्या हो तो ज़मीन से 30 से 60 सेमी ऊंची उठाई हुई क्यारियां बनाएं।

प्रवर्धन

बीज द्वारा

बैंकसिया के बीज कठोर लकड़ी जैसे शंकु में बंद रहते हैं।

1. गर्मी उपचार: बीजीय शंकु को ओवन में 125°C पर 1 घंटे रखें या हल्की आंच पर सेकें, जिससे शंकु खुल जाएं।
2. भिगोना: यदि शंकु न खुले तो 24 घंटे ठंडे पानी में रखकर धूप में सुखाएं।
3. बुआई: 50% रेत और 50% कोकोपीट के मिश्रण में बीजों को 3 मिलीमीटर गहराई पर बोएं। 20°C से 25°C तापमान में बीज 21 से 40 दिनों में अंकुरित होते हैं।

कलम द्वारा

आधी-पकी टहनियों की 10-15 सेमी लंबी कटिंग लें। नीचे की पत्तियां हटाकर रूटिंग हार्मोन लगाएं और रेतीले माध्यम में रोपें।

रोपाई एवं पौध प्रबंधन

दूरी

- छोटी किस्म व कट फ्लावर: 1.5 मीटर × 1.5 मीटर
- मध्यम झाड़ियां: 2.5 मीटर × 2.5 मीटर
- बड़े पेड़: 3.5 से 4 मीटर

समय व तरीका

मैदानी क्षेत्रों में शरद ऋतु (अक्टूबर-नवंबर) और पहाड़ी क्षेत्रों में वसंत ऋतु (फरवरी-मार्च) में रोपाई करें। 45 × 45 × 45 सेमी के गड्ढों में रेत और हल्की सड़ी खाद मिलाकर पौधा लगाएं। रोपाई के बाद मिट्टी को अच्छे से दबाएं और हल्का पानी दें।

सिंचाई एवं पोषण प्रबंधन

सिंचाई

- शुरुआती 6 महीने: हफ्ते में 1 से 2 बार पानी दें।
- पुराना पौधा: 1 से 2 साल बाद यह सूखा सहन कर लेता है। केवल ऊपरी मिट्टी सूखने पर ही पानी दें। ड्रिप सिंचाई सबसे उपयुक्त है।

फास्फोरस का नियम

बैंकसिया की जड़ों में प्रोटीओइड जड़ें होती हैं जो मिट्टी से सूक्ष्म पोषक तत्व खुद खींच लेती हैं।

- चेतावनी: इस पौधे में DAP, SSP या फास्फोरस युक्त खाद कभी न डालें। अत्यधिक फास्फोरस से पौधा जलकर मर जाता है। केवल साल में एक बार सड़ी हुई गोबर की खाद की हल्की मात्रा दें।

खरपतवार नियंत्रण एवं छंटाई

खरपतवार व मल्चिंग

तने से 10 सेमी की दूरी छोड़कर चारों तरफ सूखी पत्तियों या लकड़ी के बुरादे की 2 से 3 इंच मोटी मल्च बिछाएं। तने से सटाकर मल्च न रखें।

छंटाई - फूल खिलने के बाद छंटाई करें। केवल वही टहनियां काटें जिन पर फूल आ चुके हैं या जो सूखी हैं। पुरानी मोटी लकड़ी को न काटें।

फूल उत्पादन, कटाई एवं फसल कटाई के बाद

समय

बीज से तैयार पौधों में 3 से 5 साल और कटिंग से बने पौधों में 2 से 3 साल में फूल आते हैं।

कटाई व देखभाल

- कटाई तब करें जब स्पाइक के निचले हिस्से के फूल खिल चुके हों और ऊपरी हिस्सा कली हो।
- कटाई सुबह के समय करें और तनों को तुरंत पानी में रखें।
- नीचे के 10-12 सेमी हिस्से की पत्तियां हटा दें। इससे फूलों की वास लाइफ 2 से 3 सप्ताह रहती है।
- सूखे फूल: फूलों को उल्टा लटकाकर हवादार छायादार कमरे में सुखाएं।

रोग एवं कीट प्रबंधन

रोग / कीट	लक्षण	बचाव व प्रबंधन
जड़ गलन (फाइटोफ्थोरा)	पत्तियां पीली पड़ना, जड़ें सड़ना	खेत में पानी न रुकने दें, संक्रमित पौधा नष्ट करें।
बोट्राइटिस (स्लेटी फफूंद)	फूलों पर भूरे धब्बे, सड़न	पौधों के बीच हवा का संचार रखें, फूलों पर पानी न छिड़कें।
पाउडरी मिल्ड्यू	पत्तियों पर सफेद चूर्ण	पौधे को पूरी धूप में लगाएं।
एफिड्स व स्केल कीट	नई कलियों का रस चूसना	नीम के तेल का छिड़काव करें।

आर्थिक महत्व एवं विपणन

- फूल मंडियां: दिल्ली (गाज़ीपुर), मुंबई, बेंगलुरु की बड़ी मंडियों के होलसेल फ्लोरिस्ट।
- इवेंट डेकोरेटर्स: शादी और कॉरपोरेट सजावट के ठेकेदारों को सीधे आपूर्ति।
- ड्राई फ्लावर उद्योग: सूखे फूलों के क्राफ्ट और बुके बनाने वाली इकाइयों को बिक्री।
- नर्सरी व्यवसाय: लैंडस्केपिंग कंपनियों और गार्डन सेंटरों को पौधे बेचना।

भारत में चुनौतियां एवं भविष्य की संभावनाएं

चुनौतियां

1. मानसून के दौरान भारी मिट्टी में जलभराव से जड़ गलन।
2. फास्फोरस वाली खादों के गलत इस्तेमाल से पौधों का सूखना।
3. स्थानीय मंडियों में इस नए फूल की जानकारी कम होना।

संभावनाएं: होटल, रिसॉर्ट और लग्जरी इवेंट्स के कारण सजावटी फूलों की मांग बढ़ रही है। सही जल-निकास वाली भूमि में यह कम लागत में तैयार होने वाली व्यावसायिक फसल है।

चित्र 3: बैंक्सिया का शुष्क पुष्प (स्रोत: गूगल/सांकेतिक)

चित्र 4: बैंक्सिया बोन्साई पौधा (स्रोत: गूगल/सांकेतिक)

चित्र 5: बैंक्सिया का फल (कॉन) एवं बीज (स्रोत: विकिमीडिया/इंटरनेट)

वार्षिक प्रबंधन कैलेंडर

समय	मुख्य कार्य
जनवरी - फरवरी	छोटे पौधों को पाले से बचाएं। सूखी शाखाएं छांटें।
मार्च - अप्रैल	बीजों की बुआई करें और नई फुटाव की देखभाल करें।
मई - जून	मल्चिंग जांचें और आवश्यकतानुसार ड्रिप से पानी दें।
जुलाई - सितंबर	मानसून में खेत से जल निकासी सुनिश्चित करें।
अक्टूबर - नवंबर	नए पौधे लगाएं और कट फ्लावर की तुड़ाई करें।
दिसंबर	ठंड से बचाव करें और सूखे फूलों का स्टॉक बनाएं।

निष्कर्ष

बैंकसिया की खेती भारतीय वातावरण में एक नया प्रयोग है। शुरुआत में बड़े क्षेत्र के बजाय केवल 20 से 50 पौधे लगाकर अपने क्षेत्र की मिट्टी और जलवायु का परीक्षण करें। खेत में जल-निकास की पक्की व्यवस्था रखें, फास्फोरस युक्त खादों से बचें और उत्पादन से पहले स्थानीय फ्लोरिस्ट व डेकोरेटर्स से बाज़ार की मांग का आकलन करें।